प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए अवसर

शोभा एल. कवूरी और शुभा एच. के.

परिचय

यदि शिक्षा का व्यापक और दार्शनिक अर्थ लिया जाए तो निस्सन्देह इसका वृहत उद्देश्य हर बच्चे को उसकी पूरी क्षमता प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। यह विश्वास कि 'हर बच्चा सीख सकता है' में इस उद्देश्य की प्राप्ति के प्रयास का भाव निहित है, इस बात को ध्यान में रखते हुए भी कि सीखने की प्रक्रियाएँ अलग-अलग बच्चों के विकास स्तर, सीखने की गति व प्रेरणा के साथ भिन्न हो सकती हैं। यहाँ पर एक और आयाम को भी शामिल करना होगा, वह है बाहरी परिवेश। वह परिवेश जिसमें सीखने का अनुभव व आदान-प्रदान किया जाता है, अर्थात बच्चे की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि जो अकसर हावी हो जाती है और इस तरह सीखने के विकास को गम्भीर रूप से प्रभावित करती है।

बच्चों की सीखने की क्षमताओं पर परिस्थितियाँ किस तरह की मजबूरियाँ थोप देती हैं इसका एक उदाहरण बड़े मेट्रो शहरों में रहने वाले प्रवासी श्रमिकों के बच्चों में अनुभवों में मिल सकता है। यह संस्थागत प्रक्रियाओं को एक साथ लाने में आने वाली चुनौतियों का भी प्रबल उदाहरण है। मुख्यत: यह श्रमिक ग्रामीण परिवारों से होते हैं और विभिन्न राज्यों से काम करने के लिए निर्माण स्थलों पर आते हैं। निर्माण स्थल पर जहाँ जीवन निर्वाह और भौतिक अस्तित्व ही अनिश्चित होता है, वहाँ शिक्षा में निवेश को कम ही प्राथमिकता मिलती है। इसके अलावा माता-पिता के रोज़गार की अस्थायी प्रकृति बच्चों को बहुत कम स्थिरता (संरचनात्मक रूप से और साथ ही समय की दृष्टि से भी) प्रदान करती है। इससे एक व्यवस्थित शैक्षिक प्रक्रिया विकसित करने में कई बाधाएँ आती हैं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने 2007 में, बेंगलूरु में निर्माण श्रमिकों के बच्चों के लिए 'एजुकेशन फॉर चिल्ड्रन ऑफ़ माइग्रेंट लेबर' (ईसीएमएल) कार्यक्रम शुरू किया। इसके लिए दो निर्माण स्थलों पर केन्द्रों की स्थापना की गई, जिसे स्वयं बिल्डरों ने समर्थन दिया और भागीदारी की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक वर्ष के भीतर इस समूह के प्राथमिक स्कूली बच्चों को मुख्यधारा में लाना है, जो सरकार के मानदण्डों के अनुसार अनिवार्य है। यह कार्य उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के माध्यम से किया जाता है। केन्द्रों में आने वाले अधिकांश बच्चे अपने पिछले सरकारी रिकॉर्ड में ड्रॉपआउट के रूप में सूचीबद्ध होते हैं।

इन बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा एक सुखद अनुभव नहीं रहा है। स्कूल न आने, पढ़ न पाने या गृहकार्य पूरा न करने पर उन्हें दोषी ठहराया जाता था; स्कूल न जाने के कारण उन्हें अवधारणाओं को समझने में बेहद मुश्किल होती और सीखने में दिक़्क़त होती। ऐसे में अगर बच्चों को स्कूल जाने और सीखने में रुचि न हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। इसलिए उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को सम्बोधित करते समय इस बाधापूर्ण सन्दर्भ और अनिश्चितता को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है।

इन केन्द्रों में आने वाले बच्चों के उदाहरणों से (बॉक्स देखें) यह संकेत मिलता है कि कुछ बच्चों को ईसीएमएल पहल ने निस्सन्देह रूप से ऐसे अवसर प्रदान किए हैं जिससे उनके अधिगम में सुधार हुआ है और उन्हें अपनी क्षमता का बोध हुआ है। इस दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए आँकड़े हैं कि व्यापक स्तर पर भी, सकारात्मक शैक्षिक परिणामों के माध्यम से कार्यक्रम का बच्चों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। रिकॉर्ड के अनुसार, पिछले 12 वर्षों में लगभग 1700 बच्चों ने ब्रिज प्रोग्राम में भाग लिया और उनमें से 745 बच्चे सफलतापूर्वक मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा में शामिल हो गए। इसके अलावा, चूँकि इन बच्चों के परिवार आजीविका के लिए लगातार अलग-अलग स्थानों पर जाते रहते हैं, इसलिए उनकी प्रगति के बारे में पता लगाने की अपनी व्यावहारिक सीमाएँ हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे बच्चे भी हो सकते हैं जिन्होंने शिक्षा कहीं और जारी रखी हो, लेकिन केन्द्रों में उनके रिकॉर्ड नहीं हैं।

'मैं सीखना चाहती हूँ, और मुझे पता है कि मैं सीख सकती हूँ'

*केन्द्र में आने वाले बच्चों के जीवन से लिए गए कुछ उदाहरण **

सुमति अपने माता-पिता के साथ रायचूर से आई थी। बेंगलूरु में उससे यह अपेक्षा की गई कि वह अपने भतीजे की देखभाल करे। जब भतीजे को केन्द्र में नामांकित किया गया तो सुमति के माता-पिता को इस बात के लिए राज़ी किया गया कि सुमति का नामांकन भी सरकारी स्कूल में करा दिया जाए। इसके बाद वह एक साल के लिए केन्द्र में आई ताकि वह मुख्यधारा की नियमित

स्कूली शिक्षा में जा सके। संकोची और शर्मीले स्वभाव की सुमति, जिस पर पहले ड्रॉपआउट का लेबल लगा दिया गया था, आज पीयू (+2 के समकक्ष) की छात्रा है। उसे मंच पर आना बहुत अच्छा लगता है। वह अकसर अपने स्कूल में और केन्द्र में वार्षिक समारोह के दौरान कार्यक्रमों में उद्घोषिका का कार्य करती है।

सात साल का भीम आन्ध्र प्रदेश से आया था और पहले ही स्कूल छोड़ चुका था। निर्माण स्थल पर आने के बाद उसके माता-पिता भीम और उसके दो भाइयों को केन्द्र में लेकर आए। भीम और उसके एक साल छोटे भाई का नामांकन स्थानीय सरकारी स्कूल में करवाया गया। सबसे छोटे भाई को प्लेग्रुप में रखा गया। यह सभी कुछ वर्षों तक केन्द्र में आए और फिर नियमित स्कूल चले गए**। आज यह तीनों अँग्रेज़ी माध्यम में स्नातक कोर्स की पढ़ाई कर रहे हैं। भीम एक उभरता नृत्य-निर्देशक (कोरियोग्राफर) है। उसका एक भाई जो कलाकार भी है, कम्प्यूटर साइंस में डिग्री कर रहा है और तीसरा कॉमर्स की पढ़ाई कर रहा है।

विष्णु जब केन्द्र में आया तो सात साल का था और एक साल से भी अधिक समय से स्कूल नहीं गया था। उसे सरकारी स्कूल में चौथी कक्षा में नामांकित किया गया। उसने कुछ समय केन्द्र में बिताया। विष्णु ने पीयू तक की पढ़ाई की। हालाँकि उसने कॉलेज की डिग्री पूरी नहीं की, लेकिन उसने घर के रखरखाव के लिए ठेकेदार के रूप में ख़ुद का व्यवसाय शुरू किया है।

* बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

** उस समय सरकारी नियमों में ब्रिज कोर्स के लिए एक वर्ष की अनिवार्यता नहीं थी।

कार्यक्रम के महत्त्वपूर्ण पहलू

यह लेख ईसीएमएल कार्यक्रम के तीन अलग-अलग किन्तु फिर भी आपस में जुड़े हुए पहलुओं पर नज़र डालता है। पहला, केन्द्रों में रोज़मर्रा के कार्यकलापों की संस्कृति और दिनचर्या, दूसरा पाठ्यचर्या तथा तीसरा बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में सभी हितधारकों की भागीदारी। यह अन्तिम पहलू इसलिए महत्त्वपूर्ण है ताकि इस बात पर चिन्तन किया जा सके कि वह कौन-सी बात थी जिसकी वजह से शायद इनमें से कई बच्चे सीख सके, विकास कर सके और स्कूली शिक्षा जारी रख सके।

एक ऐसी संस्कृति जो विश्वास और आत्मविश्वास का निर्माण करती है

ईसीएमएल पहल की जड़ें इस विश्वास में निहित हैं कि हर बच्चा सीख सकता है और अपने अधिगम और विकास में सफलता का अनुभव कर सकता है, बशर्ते उसे अपनी गति से सीखने का अवसर मिले और ऐसा करने के लिए पर्याप्त समर्थन मिले। इस कार्यक्रम की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें बच्चों को ऐसे वातावरण में सीखने का आनन्द लेने का अवसर मिलता है जहाँ वे सुरक्षित महसूस करते हैं। साथ ही उन्हें यह एहसास होता है कि उनका ध्यान रखा जा रहा है क्योंकि उनकी अधिकांश स्कूली शिक्षा अनियमित रही है और इसलिए यह उनके लिए एक ख़राब अनुभव रहा है।

निम्नलिखित विवरण में बताया गया है कि सचेत प्रयास और समय के साथ इस प्रकार की संस्कृति कैसे विकसित हुई।

- शिक्षकों का पूरा ध्यान विश्वास का निर्माण करने पर रहता है, इसलिए बच्चों को प्रेरित करने या अनुशासित करने के लिए भय या धमकी (यहाँ तक कि अप्रत्यक्ष रूप से भी) का उपयोग कभी नहीं किया जाता है। नए शिक्षक यह देखकर सीखते हैं कि अन्य लोग परिस्थितियों को कैसे सँभालते हैं। बच्चे अपने शिक्षकों पर भरोसा करते हैं और उनके साथ अपने विचार और समस्याएँ साझा करते हैं।
- कक्षा की शिक्षण पद्धति एक साथ सीखने पर ज़ोर देती है, जिससे बच्चों को खोज करने, स्वतंत्र और खुले विचार-विमर्श करने और संवाद करने का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे घर की समस्याओं के कारण परेशान हैं तो प्रार्थना सभा के समय सप्ताह में दो बार होने वाली साझा बैठकों के दौरान वे अपनी भावनाओं के बारे में बात करते हैं। वे माता-पिता के बीच झगड़े, पिता की शराब पीने की आदत, माँ को पीटने या पड़ोसियों के बीच झगड़े के बारे में बात करते हैं। इन बैठकों के दौरान शान्त, फ़िक्रमन्द और देखभालपूर्ण माहौल होता है। शिक्षक बच्चों की बात बिना किसी टीका-टिप्पणी के सुनते हैं। कुछ समय बाद शिक्षक घर जाकर माता-पिता से चर्चा कर सकते हैं कि उनके व्यवहार का उनके बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।
- जब बच्चे केन्द्र में आते हैं तो उनके सीखने के स्तर भिन्न होते हैं। वे अलग-अलग आयु वर्गों से भी होते हैं। बच्चे स्तर आधारित समूहों में एक साथ काम करते हैं चाहे उनकी उम्र कितनी भी हो। एक साथ काम करने के बारे में बड़े और छोटे बच्चों की मिली-जुली भावनाओं से निपटने के लिए शिक्षक कई रणनीतियों का उपयोग करते हैं। वे एक समूह के भीतर हर बच्चे को विशिष्ट जिम्मेदारियाँ सौंपते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक बच्चे को हर क़दम पर सकारात्मक मज़बूती प्रदान की जाए। जैसे-जैसे उनके सीखने में बढ़त होती है, वैसे-वैसे बच्चों के समूह बदल दिए जाते हैं। अन्ततः बच्चों के लिए यह बात बहुत कम मायने रखती है कि वे मिश्रित आयु समूह में बैठे हैं।

- वैसे तो केन्द्र में तीन आयु समूह हैं और प्रत्येक की अपनी विशिष्ट पाठ्यचर्या है लेकिन छोटे बच्चों को बड़े भाई-बहनों के साथ बैठने से नहीं रोका जाता। यह तब तक जारी रह सकता है जब तक कि छोटा बच्चा अपने समूह के साथ घुल-मिल न जाए। इससे बच्चों में एक-दूसरे का ध्यान रखने और संवेदनशीलता की भावना का निर्माण करने में भी मदद मिली है।
- बच्चों को सुबह दूध, दोपहर का भोजन और शाम को घर लौटने से पहले नाश्ता मिलता है। शिक्षक बच्चों के साथ भोजन करते हैं जिससे उनके बीच एक मज़बूत बन्धन विकसित होता है।
- शुरुआत में कुछ बच्चों का व्यवहार सामान्य नहीं होता— जैसे वे अन्य बच्चों की पिटाई करते हैं, इधर-उधर भागते हैं, चीज़ें फेंकते हैं और खिलौने तथा अन्य सामग्रियों को वापस अपनी जगह पर नहीं रखते हैं। तर्क के ज़रिए शिक्षक इन आदतों को बदलने का प्रयास करते हैं और धीरे-धीरे समझाते हैं कि उनसे क्या और क्यों अपेक्षित है। कभी-कभी बड़े बच्चे भी उनसे बात करके मदद करते हैं।
- जो बच्चे मुख्यधारा में आ जाते हैं, उनमें अपनेपन की प्रबल भावना होती है और वे केन्द्र को अपने दूसरे घर के रूप में देखते हैं। उनमें से अधिकांश स्कूल जाने से पहले केन्द्र पर आते हैं और घर लौटते हुए बाक़ी बच्चों के साथ शाम का नाश्ता करते हैं और अपना गृहकार्य पूरा करते हैं। स्कूल की छुट्टियों के दौरान वे छोटे बच्चों की देखभाल की ज़िम्मेदारी भी लेते हैं, जैसे भोजन परोसना, सफ़ाई करना और कक्षा में अध्यापकों की मदद करना।

पाठ्यचर्या : एक मॉड्यूलर दृष्टिकोण

इस कार्यक्रम में एक विकासात्मक पाठ्यचर्या का दृष्टिकोण अपनाया गया है जिसमें बच्चों की क्षमता पर ध्यान दिए बिना सभी को शामिल किया जाता है। बच्चों को उनके उपयुक्त आयु वर्ग में रखा जाता है— शिशुओं और बच्चों का समूह (6 महीने से 3 वर्ष तक), प्री-स्कूल (3 से 6 वर्ष तक) और प्राथमिक स्कूल समूह (6 वर्ष और उससे ऊपर)। छोटे बच्चों के समूहों के लिए मुख्य रूप से स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान दिया जाता है। साथ ही उन्हें स्फूर्तिदायक अनुभवों और मौखिक भाषा के निर्माण के अवसर भी दिए जाते हैं।

अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों को सम्मिलित करने के लिए लचीली पाठ्यचर्या बनाने का प्रयास किया गया है। नए शामिल हुए बच्चों को केन्द्र में स्वतंत्र रूप से इधर-उधर जाने और पहले से चल रही गतिविधियों तथा परिवेश के साथ परिचित होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यदि ऐसा लगता है कि वे निर्माण स्थल पर कुछ अधिक समय तक के लिए रहेंगे तो उन्हें पास के सरकारी स्कूल में नामांकित किया जाता है। तत्पश्चात केन्द्र के शिक्षक बच्चों को उपयुक्त अधिगम समूहों में रखने से पहले उनके अधिगम के स्तर का अनुमान लगाने के लिए उनका आकलन करते हैं।

इस समूह के लिए एक मॉड्यूलर दृष्टिकोण का अनुसरण किया जाता है क्योंकि बच्चों को एक वर्ष के भीतर मुख्यधारा में लाने की अपेक्षा की जाती है। प्रत्येक मॉड्यूल अपने आप में एक पूर्ण इकाई है क्योंकि यह बच्चे निर्माण स्थल पर कब तक रहेंगे, यह बात अनिश्चित होती है। इसमें कन्नड़ और अँग्रेज़ी भाषाओं के साथ-साथ गणित और पर्यावरण अध्ययन शामिल हैं। शिक्षण के दौरान अकसर बुनियादी अवधारणाओं पर फिर से चर्चा की जाती है। इससे उस बच्चे को अवधारणा समझने में मदद मिलती है जो अभी-अभी शामिल हुआ है। साथ ही जो बच्चे पहले से केन्द्र में हैं वे भी अवधारणा को और अच्छी तरह समझ पाते हैं। अधिक ध्यान बच्चों को बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल प्रदान करने पर दिया जाता है।

बच्चों को नाटक, कला और अन्य गतिविधियों के माध्यम से सुनने, चर्चा करने, खेलने और रचना करने के अवसर दिए जाते हैं और इस तरह से उन्हें उत्सुक, सक्रिय और उत्साही शिक्षार्थी बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए दिन-प्रतिदिन के जीवन में पाई जाने वाली सामग्रियों और संसाधनों का उपयोग किया जाता है। चूँकि शिक्षकों ने इन सामग्रियों को बनाने की प्रक्रिया में भाग लिया है इसलिए वे भली-भाँति इनका उपयोग करने में सक्षम हैं।

गणित की अवधारणाओं को शिक्षण उपकरणों की सहायता से समझाया जाता है और विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के साथ काम करते हैं, जैसे मुद्रा के बारे में सीखते समय 'काग़ज़ के नक़ली नोट', स्थानीय मान की अवधारणा को समझने के लिए लकड़ियों के बण्डल, समय की संरचना समझने के लिए वास्तविक घड़ी। इसी तरह विभिन्न अवधारणाओं की समझ के लिए कंकड़, मोतियों और चूड़ियों जैसी अन्य सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।

ईवीएस कक्षाओं में बुद्धिशीलता (brainstorming) और समूह चर्चा, रोल-प्ले, बैंक, डाकघर, रेलवे स्टेशन, बस स्टॉप और पेट्रोल पम्प जैसे स्थानों का दौरा करना शामिल हैं जो बच्चों को उनके परिवेश के बारे में अधिक जागरूक बनाने में मदद करते हैं। बच्चों को प्रश्न पूछने और अपनी समझ तथा अनुभवों को साझा करने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया जाता है।

शिक्षा का मूल माध्यम कन्नड़ है। साथ में थोड़ी-थोड़ी प्रारम्भिक अँग्रेज़ी भी माध्यम के तौर पर उपयोग की जाती है। जिन बच्चों की मातृभाषा हिन्दी है, शिक्षक उन्हें हिन्दी में सहायता करते

हैं। कहानियों, कविताओं, पहेलियों का अभिनय करना और प्रामाणिक सामग्री जैसे समाचार पत्र, रैपर आदि उपयोग करने से भाषा सीखने में मदद मिलती है। 'वर्ड फॉर द डे' जैसी गतिविधियों से बच्चों को फ़ायदा भी होता है और उन्हें इनमें बहुत आनन्द भी आता है।

बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि उनके सामने जब भी कोई नया शब्द आए तो वे उसे कक्षा में बताएँ। इससे चर्चाएँ आगे बढ़ती हैं और बच्चों को अपने अनुभव के बारे में बोलने का मौक़ा मिलता है। 'वर्ड फॉर द डे' गतिविधि का शब्द कन्नड़, अँग्रेज़ी और यदि ज़रूरत पड़े तो हिन्दी में भी दिया जाता है। बच्चे वस्तु, भावना या किसी घटना से जुड़े शब्दों को साझा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, प्रारम्भिक स्तर पर बच्चे एक शब्द को तीनों भाषाओं में सुनते हैं जैसे कि 'ख़ुश', 'पायल' या फिर कोई अनुभव जैसे 'मेले में जाना'। दूसरे स्तर पर वे 'वर्ड फॉर द डे' गतिविधि के शब्द के साथ कन्नड़ और थोड़ी बहुत अँग्रेज़ी में सरल वाक्य बनाते हैं।

पाठ्यचर्या में स्वास्थ्य का एक घटक भी है जो पोषण और स्वच्छता पर चर्चा को प्रोत्साहित करता है। बाग़वानी और खाना पकाने जैसी गतिविधियों से सीखने के साथ-साथ मज़ेदार अनुभव भी होते हैं। बच्चे सन्तुलित भोजन और खाना पकाने की बुनियादी बातों के बारे में सीखते हैं जैसे कि दालों को अंकुरित करना, सब्ज़ियाँ पकाना या रोटियाँ बनाना। खाना बनाने के अनुभव से भाषा निर्माण के कौशल के साथ-साथ अनुमान लगाने और नाप-तौल के कौशल विकसित करने भी मदद मिलती है।

बाग़वानी के घण्टों के दौरान बच्चे क्यारियों में सब्ज़ियाँ उगाना, उनकी देखभाल करना सीखते हैं और पैदावार को साझा करते हैं। कुछ साल पहले बोया गया आम का एक पेड़ इस साल फल देने लगा है। बच्चों और बड़ों ने मिलकर उसका अचार बनाया और आपस में बाँटा।

यह सभी बातें प्रत्येक मॉड्यूल में निहित होती हैं और यह मॉड्यूल काफ़ी हद तक परिवर्तनशील होते हैं। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है, इसलिए आकलन का उपयोग प्रत्येक बच्चे की प्रगति को रिकॉर्ड करने के लिए किया जाता है। बच्चों को विभिन्न तरीक़ों से अपने अधिगम का प्रदर्शन करने के अवसर मिलते हैं। शिक्षकों के निरन्तर अवलोकन और विस्तृत नोट्स से योजना बनाने और तैयारी करने में आसानी होती है। प्रत्येक बच्चे के लिए व्यक्तिगत पोर्टफोलियो के रिकॉर्ड बनाए जाते हैं जिसमें बच्चे के कार्यों का विवरण होता है। मॉड्यूल के अन्त में एक योगात्मक आकलन किया जाता है जिसका उद्देश्य स्कूल में शामिल होने के बाद बच्चों को मुख्य रूप से पेन और पेपर टेस्ट के लिए तैयार करना है।

हितधारकों का समावेशन

शिक्षक

शिक्षक सीखने में बच्चों की सहायता करने और भावनात्मक रूप से उनका समर्थन करने के लिए नियमित रूप से और प्रतिबद्धता के साथ जुटे रहते हैं। आत्मविश्वास निर्माण, साझाकरण, समूहों में काम करना, नए विद्यार्थियों के साथ सहयोग और समायोजन करना— इन सभी के लिए निरन्तर संवाद, साझाकरण और भागीदारी के माध्यम से प्रयास किया जाता है। इन सबके कारण बच्चे सहज होते हैं और निस्सन्देह रूप से मुख्यधारा में आ पाते हैं।

शिक्षक कम-से-कम तीन भाषाएँ जानते हैं और नए बच्चों को सहज बनाने की पूरी कोशिश करते हैं क्योंकि यह बच्चे देश के विभिन्न भागों से आते हैं और विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं। शिक्षक हर बच्चे की प्रगति का रिकॉर्ड रखते हैं। चूँकि बच्चे अकसर एक मॉड्यूल के बीच में ही केन्द्र छोड़कर अपने माता-पिता के साथ अस्थायी रूप से अपने गाँव चले जाते हैं, इसलिए जब वे वापस केन्द्र में लौटते हैं तो यह रिकॉर्ड बहुत काम आते हैं।

ईसीएमएल के कार्यक्रम की एक मूलभूत बात है शिक्षकों द्वारा अपने अनुभव साझा करना और योजना बनाना। हर पन्द्रह दिन में एक बार, शिक्षक पिछले पखवाड़े के अनुभव और अगले पखवाड़े की योजना पर विचार करने के लिए मिलते हैं। वे समुदाय, स्वास्थ्य व पोषण, बच्चों की प्रगति पर नज़र रखने, प्रशासन से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा भी करते हैं।

शिक्षक उस सरकारी स्कूल के मुख्य शिक्षक के साथ सम्पर्क में रहने के लिए सम्मिलित प्रयास करते हैं, जहाँ बच्चों का दाख़िला होता है ताकि उनके रिकॉर्ड अद्यतन किए जा सकें, उनकी प्रगति के बारे में जाना जा सके जिनके लिए केन्द्र में समर्थन जारी है। वे सरकारी स्कूल के स्टाफ़ के साथ केन्द्र में प्रयुक्त पाठ्यक्रम और संस्कृति के बारे में जानकारी साझा करते हैं जिसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि शारीरिक दण्ड देना पूर्णतया प्रतिबन्धित है।

संस्थाओं के बीच इस तरह के आपसी सम्बन्ध यह सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि बच्चे प्रेरित हों और बिना किसी डर के और नियमित रूप से स्कूली शिक्षा जारी रखें। जिस सरकारी स्कूल में यह बच्चे जाते हैं, वहाँ के स्टाफ़ का यह अवलोकन है कि अमूमन यह बच्चे आत्मविश्वास से भरे होते हैं। हालाँकि जब वे स्कूल में दाख़िला लेते हैं, तब वे भले ही कक्षा के अपेक्षित अधिगम स्तर पर नहीं होते हैं लेकिन तो भी इस बात से काफ़ी मदद मिलती है कि वे प्रेरित हैं और अधिगम के लिए खुले मन से तैयार हैं।

अभिभावक समुदाय

समय और निरन्तर संवाद के साथ ही अभिभावकों का समुदाय यह बात समझ पाया है और इसकी सराहना करने लगा है कि हमारा केन्द्र नियमित रूप से और एक दर्शन के साथ एक औपचारिक शिक्षण स्थान के रूप में कैसे काम करता है। निर्माण स्थल पर बच्चों के निवास की अवधि की अनिश्चितता को देखते हुए, स्कूली शिक्षा और मुख्यधारा की निरन्तरता बनाए रखने में अभिभावकों के साथ नियमित रूप से जुड़ना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। शिक्षक अभिभावकों के साथ निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं और उन्हें केन्द्र की प्रक्रियाओं के बारे में बताते रहते हैं।

समुदाय के सदस्य केन्द्र की दैनिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। जो माताएँ अपने छोटे बच्चों के कारण निर्माण स्थल पर काम नहीं करतीं, वे अन्य बच्चों की देखभाल करने के लिए आ जाती हैं। वे बच्चों को भोजन परोसती हैं, कहानियाँ और गीत सुनाती हैं। समुदाय के सदस्य नए बच्चों को लाने, उत्सव मनाने, रखरखाव और परिसर की सफ़ाई और रंग-रोगन करने में मदद करते हैं। उन्हें अपने अनुभव साझा करने व कृषि पर बात करने लिए आमंत्रित किया जाता है; या फिर वे निर्माण स्थल पर अपने काम के बारे में या निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों के बारे में या सुरक्षा सम्बन्धी सावधानियों के बारे में बताते हैं। अभिभावकों को कक्षा में बैठकर अपने बच्चों के अधिगम का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

माता-पिता, पुराने विद्यार्थियों और बिल्डरों के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाई गई है जो अग्रलिखित बातों में केन्द्र की टीम की मदद करती है : बच्चों की प्रगति पर नज़र रखना, यह सुनिश्चित करना कि बच्चे नियमित रूप से केन्द्र में उपस्थित हों; अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा जारी रखने के लिए प्रेरित करना; बच्चों की सलामती और सुरक्षा के बारे में समुदाय को शिक्षित करना इत्यादि। अगर अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के लिए बैंक में पैसा जमा कर सकते हों तो इसके लिए भी उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

इस अनुभव से प्राप्त सबक़

कार्यक्रम के कुछ प्रमुख पहलू हैं जिनकी वजह से यह सम्भव हो पाया है। पहला और शायद सबसे महत्त्वपूर्ण सबक़ यह है कि हम जिस जनसमुदाय की बात कर रहे हैं वह अपनी कमज़ोरियों से घिरा हुआ है। इसलिए उन्हें एक सुरक्षित और सक्षम वातावरण प्रदान करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। दूसरा आवश्यक कारक है इन बच्चों के साथ सम्बन्ध बनाने और उचित शैक्षणिक प्रथाओं को विकसित करने में शिक्षण समुदाय की भूमिका और उनका उन्मुखीकरण। विशेष रूप से शिक्षक बच्चों को नियमित स्कूली शिक्षा में सफलतापूर्वक ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक ऐसा पहलू है जिस पर बल देने और उसे मज़बूत करने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में, विधि और सामग्री के मामले में पाठ्यक्रम की उभरती भूमिका महत्त्वपूर्ण है लेकिन इसके लिए उपर्युक्त दो पहलुओं का सफल कार्यान्वयन आवश्यक है। अन्त में, अभिभावक समुदाय को सीमित करने वाले कारक की बजाय सम्भावित रूप से सक्षम करने वाले कारक के रूप में देखा जा सकता है। इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि बच्चों को मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा में लाने का समर्थन करने में उनकी भूमिका कैसे बेहतर हो सकती है।

शोभा एल. कवूरी बेंगलूरु ज़िला संस्थान, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की सदस्य हैं। वे शिक्षिका हैं और राजस्थान में शैक्षिक और विकास की पहलों में शामिल रही हैं। वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन स्कूल की शुरुआती टीम की सदस्य रही हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में पाठ्यचर्या विकास, शिक्षक व्यावसायिक विकास और भाषा विकास के क्षेत्रों में व्यापक कार्य किया है। उनसे shobha.kavoori@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

शुभा एच. के. अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की सदस्य हैं। वर्तमान में वे बेंगलूरु ज़िला संस्थान में अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन पहल के संयोजन के साथ बेंगलूरु में चिल्ड्रन ऑफ़ माइग्रेंट लेबर के ब्रिज सेंटर का कार्य भी सँभाल रही हैं। प्री-स्कूल की पाठ्यचर्या और शिक्षक क्षमता निर्माण के कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने के लिए वे राज्य के शिक्षा विभाग और महिला व बाल कल्याण विभाग के साथ गहन रूप से कार्य कर रही हैं। वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन स्कूल की शुरुआती टीम की सदस्य रही हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में पाठ्यचर्या विकास, शिक्षक व्यावसायिक विकास और भाषा विकास के क्षेत्रों में व्यापक कार्य किया है। उनसे shubha@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल